शोध लेख

मोरनी हिल्स, हरियाणा के यूफॉर्बिएसी कुल के आयुर्वेदिक पादप

आचार्य बालकृष्ण[1], उदय भान प्रजापति[1]*, अनुपम श्रीवास्तव[1], भाष्कर जोशी[1], रमा शंकर पाठक[1], राजेश मिश्रा[1]

[1]पतंजलि जड़ी-बूटी अनुसन्धान विभाग, पतंजलि अनुसन्धान संस्थान, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

*संवाद लेखक - डॉ. उदय भान प्रजापति, पतंजलि जड़ी-बूटी अनुसन्धान विभाग, पतंजलि अनुसन्धान संस्थान, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड, भारत
E-mail: udaybhan.prajapati@prft.co.in

सारांश

मोरनी हिल्स, भारत के हरियाणा राज्य के जिला पंचकुला में हिमालय की शिवालिक श्रेणी की शाखाएं हैं। मोरनी हिल्स की मिट्टी दोमट रेतीली मिट्टी है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 300 से 1400 मीटर है। मोरनी की जलवायु को, उपोष्णकटिबंधीय मानसून, हल्के और शुष्क सर्दी, उष्ण गर्मी और उप-आर्द्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो मानसून के मौसम को छोड़कर गर्मी और सर्दियों के साथ मुख्य रूप से शुष्क होता है। मोरनी पहाड़ियों की वनस्पतियों की वर्तमान स्थिति के अनुसार 571 वंश के अंतर्गत आने वाले 980 पौधों की पहचान की गई है और जिसमें मोरनी हिल्स से 18 लाइकेन, 12 ब्रायोफाइट्स, 16 टेरिडोफाइट्स, 03 अनावृतबीजी और 931 आवृतबीजी प्रजातियां पाई गई हैं। आवृतबीजी पौधों में, 24 पौधे यूफॉर्बिएसी कुल से संबंधित है, जिनमें 10 शाकीय, 10 झाड़ी और 4 वृक्ष हैं; इस कुल के समूह में दो शाकीय (यूफॉर्बिया हिर्टा, यूफॉर्बिया थाइमिफोलिया) चार झाड़ी (बैलियोस्पर्मम सोलनिफोलियम, जेट्रोफा कर्कस, जेट्रोफा गॉसिपिफोलिया, रिसिनस कम्युनिस) और एक वृक्ष (मैलोटस फिलिपेंसिस) में अत्यधिक औषधीय गुण दिखते हैं। इस पत्र में लेखकों ने मोरनी हिल्स में रिपोर्ट किए गए यूफॉर्बिएसी कुल के पौधों के आयुर्वेदिक गुणों का वर्णन किया है।

Abstract

Morni Hills are the offshoots of Shivalik range of the Himalayas in district Panchkula, State Haryana, India. The soil type in Morni Hills is loamy sand soil. It has an altitude range from 300 to 1400 m above mean sea level, an altitude of 1400 m. The climate of Morni can be classified as subtropical monsoon, mild & dry winter, hot summer and sub-humid which is mainly dry with hot summer and cold winter except during monsoon season. As per current status of flora of Morni hills 980 plants have been identified falling under 571 genera, 143 families and in which 18 lichens, 12 bryophytes, 16 pteridophytes, 03 gymnosperms and 931 angiosperms species are reported from Morni Hills. In angiosperm, Morni hills reported 24 plants belonging to family Euphorbiaceae, out of which 10 herbs, 10 shrubs and 4 trees were reported. In this group two herbs (*Euphorbia hirta* L., *Euphorbia thymifolia* L.) four shrubs (*Baliospermum solanifolium* (Burm.) Suresh, *Jatropha curcas* L., *Jatropha gossypiifolia* L., *Ricinus communis* L.) and one tree [*Mallotus philippensis* (Lam.) Müll.Arg.] show high medicinal properties. In this paper authors explore the ayurvedic properties of euphorbiaceous plant reported from Morni Hills.

परिचय

मोरनी हिल्स भारत में शिवालिक पर्वत श्रेणी की एक प्राकृतिक उपशाखा है, जो हरियाणा राज्य में चण्डीगढ़ के निकट पंचकुला जनपद में स्थित है। इसकी सबसे ऊँची चोटी समुद्र तल से लगभग 1100-1500 मीटर ऊँची है। मोरनी हिल्स का तापमान ग्रीष्म-ऋतु में 18-40°C तथा सर्दी में 4-33°C तक रहता है। यहाँ मिश्रित पर्णपाती वन पाया जाता है। शिवालिक पर्वत श्रेणी हिमालय पर्वत का सबसे दक्षिणी तथा भौगोलिक रूप से नवीन भाग है, जो पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है। इसकी औसत ऊँचाई 900-1200 मीटर है और इसकी कई उपश्रेणियाँ भी हैं। यह 1600 किमी तक पूर्व में तिस्ता नदी, सिक्किम में पश्चिमावर्त नेपाल और उत्तराखंड से कश्मीर होते हुए पाकिस्तान तक फैली है, ये पहाड़ियाँ पंजाब में होशियारपुर एवं अंबाला जिलों तथा हिमाचल प्रदेश में सिरमौर जिले के पार जाती हैं, इस भाग में अनेक नदियाँ विद्यमान हैं, जिनसे पश्चिम में घग्गर नदी सबसे बड़ी नदी है। मोरनी हिल्स वनस्पतियों के साथ-साथ वन्य जीवों की एक विशाल विविधता के लिए भी जाना जाता है। मोरनी पहाड़ियों की वनस्पतियों की वर्तमान स्थिति के अनुसार 571 वंश के अंतर्गत आने वाले 980 पौधों की पहचान की गई है और जिसमें मोरनी हिल्स से 18 लाइकेन, 12 ब्रायोफाइट्स, 16 टेरिडोफाइट्स, 03 अनावृतबीजी और 931 आवृतबीजी प्रजातियाँ पाई गई हैं। आवृतबीजी पौधों में, 24 पौधे यूफॉर्बिएसी कुल से संबंधित है, जिनमें 10 शाकीय, 10 झाड़ी और 4 वृक्ष हैं।भारत में औषधीय पौधों की जानकारी वैदिक काल से ही परम्परागत अक्षुण्य चली आई है, जिनमें अथर्ववेद मुख्य रूप से आयुर्वेद का प्राचीनतम उद्गम स्रोत रहा है। धन्वंतरि, चरक, सुश्रुत आदि ऋषियों के अथक प्रयासों के कारण ही विश्व की प्रथम चिकित्सा प्रणाली (आयुर्वेद) प्रचलन में आई हैं। आधुनिक समय में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में जड़ी-बूटियों का प्रयोग कई रोगों के निदान में किया जाता है। इनका महत्व कोविड -19 जैसी महामारी के दौरान आम जनमास से लेकर शीर्ष आधुनिक विद्या के चिकित्सकों को भी प्रभावित करती है [1-10]।

सामग्री और विधि

मोरनी हिल्स का वानस्पतिक सर्वेक्षण, पतंजलि योगपीठ के वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 2018 के मार्च, जुलाई एवं अक्टुबर माह में किया गया था। वानस्पतिक सर्वेक्षण के दौरान वहाँ पाए जाने वाले पादपों की एक सूची का निर्माण हुआ जिसमें से यूफार्बिएसी कुल के पौधों पर आधारित विश्लेषण के पश्चात् 24 पादपों (Table 1) की एक सूची में से महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का विस्तृत वानस्पतिक विवरण एवं औषधीय गुण और प्रयोगों के विषय में इस शोधपत्र में उल्लेख किया गया है।

महत्वपूर्ण औषधीय पौधे

1.पादप नामः बैलिओस्पर्मम सोलेनिफोलियम [*Baliospermum solanifolium* (Burm.) Suresh]

कुलः यूफॉर्बिएसी (Family: Euphorbiaceae)
संस्कृत नामः दन्तिका अरोमानुपत्रा (Dantikā aromānupatrā)
सामान्य नामः दन्ती

वानस्पतिक विवरणः यह 90-180 सेमी ऊँचा, पर्णिल, स्थूल, साधारणतया उभलिंगाश्रयी अथवा एकलिंगाश्रयी, बहुवर्षीय क्षुप। मूल स्थूल, सीधा, विभाजित। मूलत्वक् भूरे वर्ण का, खुरदरा, अंतः काष्ठ श्वेताभ-पीत वर्ण का, चिकना। नवीन प्ररोह एवं पर्णवृन्त समान रूप से लग्नरोमश। काण्ड शाकीय, शाखाएँ आधार से उत्पन्न, कभी-कभी पर्ण के अधोभाग तथा नवीन प्ररोह को छोड़कर अरोमश, त्वक् हल्के भूरे वर्ण का। पत्र सरल, एकान्तर, विभिन्न आकार के, उर्ध्व-भाग के पत्र छोटे, 5-8 सेमी लम्बे, भालाकार, अधोभाग के पत्र बृहत्, लगभग 30 सेमी लम्बे एवं 25 सेमी चौड़े, दीर्घायत-अण्डाकार अथवा गोलाकार या हस्ताकार 3-5 पालियुक्त एवं कोटरीनुमा दंतुर, आधार गोलाकार या फनाकार, आधार 3-5 शिरायुक्त, उर्ध्व पत्र के पर्णवृंत छोटे और अधोभाग के पर्णवृंत 2-15 सेमी लम्बे, रोमश से अरोमश, शीर्ष पर युग्मित अनुपत्रक ग्रन्थि-युक्त। पुष्प अनेक कक्षीय असीमाक्ष अथवा संकुचित गुच्छों में, सभी पुष्प नर या कुछ मादा पुष्प अधोभाग में, छोटे, हरिताभ-पीत वर्ण। सहपत्र छोटे, पुंपुष्प में पुष्पवृन्त 2-12 मिमी लम्बा, बाह्यदलपुंज गोलाकार, 2-5 मिमी लम्बे, 4-5 भागों में विभाजित, अरोमश अथवा अल्प रोमश। खण्ड लगभग गोलाकार, अवतल, कोरछादी, आच्छादित, स्पष्ट धब्बेदार। बिम्ब 6, मुलायम, पालिक ग्रंथिमय। पुंकेसर लगभग 15-20, 2 मिमी लम्बे, पुंतन्तु तनु, मुक्त। परागकोश 0.5 मिमी व्यास के, चौड़े, लगभग वृक्काकार, अंतस्थ। स्त्री पुष्प लगभग वृन्तहीन, पुष्पवृन्त 2-10 मिमी लम्बा, फल में 5 मिमी तक अतिरिक्त लम्बा, स्थूल, रोमश। बाह्यदल 5, अधोमुख अण्डाकार-भालाकार, रोमश, तीक्ष्णाग्र, दंतुर, 1-2×0.8-1 मिमी लम्बे और चौड़े। बिम्ब छोटा, छल्लेदार, 2.5 मिमी व्यास का, तनु, प्यालिकाकार, कुंठदंती। अण्डाशय त्रिपालिक लगभग गोलाकार, 2 मिमी व्यास का, सघन मृदुरोमी-रोमश। वर्तिका 3, 1.5-3 मिमी लम्बी, शीर्ष द्वि-विभाजित। वर्तिकाग्र चिकने, झालर रहित। फल सम्पुटक, निलंबी, लगभग गोलाकार, 8-13 मिमी व्यास का, सूक्ष्मरोमिल। बीज दीर्घायत, दीर्घवृत्ताकार, चिकने, धब्बेदार, चमकीले, 0.6-0.8 सेमी लम्बे, तैलीय भूणपोष-युक्त एवं पीताभ बिन्दुवत् धारीदार। पुष्पकाल मार्च-मई एवं फलकाल जून-सितम्बर के मध्य होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः मूल-तापजनन, विरेचक, शोथघ्न, पाचक, कृमिघ्न, मूत्रल, रक्तिमाकर, ज्वरघ्न व बल्य। पत्र-विरेचक। बीज-विरेचक, रक्तिमाकर, उत्तेजक । सर्वांग शोथ, जलशोफ, आध्मान, मल विबंध, कामला, अर्श, कुष्ठ, त्वक्-विकार, बिन्दु मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, व्रण, प्लीहावृद्धि, पाण्डु, श्वित्र एवं कर्कटार्बुद में लाभकारी है।

2.**पादप नामः** यूफॉर्बिया हिर्टा (*Euphorbia hirta* L.)

कुलः यूफॉर्बिएसी (Family: Euphorbiaceae)
संस्कृत नामः क्षीरिका रोमशा (Kshīrikā romaśā)
सामान्य नामः दुग्धिका (बड़ी दुग्धिका)

वानस्पतिक विवरणः यह 15-50 सेमी तक ऊँचा, सीधा अथवा भूस्तारी, तनु, विसरित, दृढ़लोमी, बहुधा दीर्घ पीताभ कड़े रोमयुक्त, वर्षायु शाकीय। मूल रेशेदार, 5-11 सेमी लम्बी, 3-5 मिमी व्यास की, सामान्यतः अशाखित तथा कभी-कभी 3-5 शाखा-युक्त। काण्ड सामान्यतः गोलाकार तथा शाखाएँ प्रायः चतुष्कोणीय। नवीन काण्ड प्रायः पीतवर्णी घन रोमों से आवरित। पत्र सरल, विपरीत, 1.3-3.8 सेमी लम्बे एवं 0.6-1.6 सेमी चौड़े, दीर्घवृत्ताकार-दीर्घायत अथवा तिर्यक् दीर्घायत-भालाकार या अधोमुख अण्डाकार-भालाकार, शीर्ष तीक्ष्णाग्र अथवा लगभग निशिताग्र, उपान्त पूर्ण अथवा लघु क्रकची, आधार साधारणतया असमतुल्य, ऊर्ध्व पृष्ठ हरित वर्ण के, अधःपृष्ठ पाण्डुर वर्ण के, तीक्ष्ण अथवा गोलाकार। मुख्य तंत्रिका अल्प, स्पष्ट। पर्णवृंत स्पष्ट, 1.5-3 मिमी लम्बे। अनुपत्र आच्छादित, त्रिकोणीय, 0.8-1.7 मिमी लम्बे, आशुपाती। पुष्प हरिताभ-पीत वर्ण के, उभयलिंगाश्रयी, अनेक, 1.3 मिमी से छोटे, समान वृंत पर, छोटे कक्षीय अल्प पुष्पावलिवृंतयुक्त गोलाकार ससीमाक्ष में स्थित। परिदलपुंज 4-5 पालिक, ग्रंथि सूक्ष्म, गोलाकार, कभी-कभी शाखारहित अथवा अत्यधिक छोटे गोलाकार श्वेत वर्ण के पूर्ण फैले हुए दलाभ शाखा युक्त। नर पुष्प 4-5, सहपत्र चक्र के कोर पर स्थित। परागकोश लाल वर्ण के। मादा पुष्प में पुष्पवृन्त छोटे, सहपत्र चक्र से उद्वर्धी। अण्डाशय 3 कोणीय, विरलरोमिल। वर्तिका मुक्त तथा वर्तिकाग्र हल्की द्विपालिक। फल सूक्ष्म, 1-1.5 मिमी लम्बे और चौड़े, 1.25 मिमी व्यास के, त्रिखण्डीय, रोमवत् सम्पुटक, फलित पुष्पावलिवृन्त 1.5 मिमी लम्बा, बीज लगभग गोलाकार से चौकोर, 0.7-0.9×0.4-0.5 मिमी लम्बे और चौड़े, हल्के रक्ताभ-भूरे वर्ण के, अनुप्रस्थ दिशा में झुर्रीदार। पुष्पकाल/फलकाल वर्ष पर्यंत परन्तु मुख्यतः अगस्त-नवम्बर के मध्य होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः उद्वेष्टनरोधी तथा श्वसन नलिकाशोथ, दमा, मधुमेह, तीव्र ज्वर, आंतविकार, कामला, नपुंसकता, आर्तव विकार एवं मूत्र विकार में लाभप्रद है। इसके दुग्ध का प्रयोग मस्सों के उपचार के लिए किया जाता है।

3.**पादप नामः** *Euphorbia neriifolia* L.

कुलः यूफॉर्बिएसी (Family: Euphorbiaceae)
संस्कृत नामः क्षीरिका चक्रपत्रा (Kshīrikā cakrapatrā)
सामान्य नामः सेहुंड, थूहर

वानस्पतिक विवरणः सेहुंड की कई जातियाँ होती हैं। कांड व शाखाएँ कांटों से परिपूर्ण। शाखाएं पतली और मुलायम। यह 1.8-4.5 मी. ऊँचा, बृहत्, मांसल, कांटेदार, छोटा वृक्ष। काण्ड सीधा, शाखाओं युक्त, बेलनाकार अथवा अस्पष्ट पंचकोणीय छोटा, युग्मित, तीक्ष्ण, अनुपत्र सदृश 8-12 मिमी लम्बा कंटकयुक्त। शाखाएँ गोलाकार या पंचकोणीय, गूदेदार, कंटकित तथा 1.8 सेमी व्यास की। पत्र एकांतर, शाखाओं के अंत पर गुच्छों में, मांसल, 15-30 सेमी लम्बे, मोटे तथा अग्रभाग में कुछ गोल। पत्र शीत या ग्रीष्म-काल में इसकी शाखा या पत्रों को तोड़ने से दुग्ध निकलता है, पुष्प लाल रंग के या पीताभ। फल लगभग 1.3 सेमी व्यास के, गहरे 4-पालिक तथा अरोमश। बीज चपटे, कोमल तथा रोमयुक्त। पुष्पकाल फरवरी से मार्च तक तथा फलकाल अप्रैल से मई तक होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः थूहर रेचक, तीक्ष्ण, अग्निप्रदीपक, चरपरा, भारी, शूल, अष्ठीलिका, अफारा, कफ गुल्म, उदर रोग, उन्माद, प्रमेह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद रोग, अश्मरी, पांडु, व्रण, ज्वर, प्लीहा, विष और दूषी विष को नष्ट करने वाली, इसका दुग्ध उष्ण, स्निग्ध, चरपरा, लघु, गुल्म, कुष्ठ, उदर रोग वालों को तथा दीर्घ उदर रोग व कोष्ठबद्धता में विरेचन के लिए हितकर है। आचार्य चरक के मत में बहुकांटों वाला थूहर अधिक तीक्ष्ण है। दो या तीन वर्ष के पुराने सेहुंड को पतझड़ के अन्त में, उसमें किसी अन्य से चीर कर दुग्ध निकालना चाहिए। यह प्रमेह, अर्श, पांडुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिए श्रेष्ठ होता है। इसके क्षीरी निर्यास का जलीय-सार व्रणरोपण क्रियाशीलता प्रदर्शित करता है। इसके पत्रों का सार मूषकों एवं चूहों में तनावरोधी, मनोविकार रोधी एवं आक्षेपरोधी क्रियाशीलता का प्रदर्शन करता है। इसका सेपोजेनिन

भाग अनॉक्सीकारक, रेडियोकिरण रक्षक (Radioprotective) एवं कोशिकाविषी क्रियाशीलता प्रदर्शित करता है। शिरो रोग में इन्द्रलुप्त-स्नुही आक्षीर को समान मात्रा में सर्षप (सरसों) तैल के साथ मिलाकर सिर में लगाने से गंजेपन में लाभकारी है। नेत्रविकार में स्नुही-क्षीर का स्थानिक प्रयोग नेत्र विकारों की चिकित्सा में किया जाता है। कर्णशूल में छिलका-रहित थूहर-काण्ड को अग्नि पर पकाकर, रस निकाल कर 1-2 बूंद कान में डालने से कर्णशूल समाप्त करता है। कर्णस्राव में थूहर की त्वचा को अर्कपत्र में लपेटकर, अग्नि पर गर्म कर उससे प्राप्त रस को प्रातःकाल 1-2 बूंद कान में डालना वातज तथा पित्तज कर्णस्राव में शीघ्र लाभकारी है। बार्धिर्य (बहरापन) में 10-20 मिली थूहर के दुग्ध को सरसों के तेल में पकाकर, जब तेल मात्र शेष रह जाय, तब 2-2 बूंद तेल कान में डालने से बहरापन दूर होता है। मुख रोग के कृमिदन्त में थूहर के मूल को मुख में धारण करने से दांत के कीड़े नष्ट होते हैं। दांत निकालने के लिए-थूहर का दुग्ध (आक्षीर) हिलते हुए दांत पर लगाने से वह दांत आसानी से गिर जाता है, परन्तु दूसरे दांत पर दुग्ध नहीं लगना चाहिए। कण्ठ रोग के गलशुण्डी में थूहर के दुग्ध का लेप लगाने से गलशुण्डिका का शमन होता है। वक्ष रोग की खाँसी में थूहर के दो पत्तों को आग पर गर्म करके, मसलकर, रस निकाल कर थोड़ा-सा नमक मिलाकर, पीना आरामदेह है । इसके अन्त के कोमल डंडों को आग में गर्म कर उनका रस निकालकर, उसमें गुड़ मिलाकर पिलाने से बच्चे को वमन और विरेचन होकर खाँसी मिटती है। त्रिधारा के रस में अड़ूसे के 10-20 पत्तों को पीसकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर 1 से 2 गोली दिन में दो-तीन बार चूसने से खाँसी ठीक होती है। उदर रोग में विरेचनार्थ काली मिर्च को थूहर के दुग्ध (आक्षीर) में डुबोकर सुखाना चाहिए। तीव्र रेचन की आवश्यकता होने पर 1-2 दाने खिलाना रेचक होता है। हरड़, पीपल और निशोथ आदि रेचक औषधियों को थूहर के दुग्ध में तर करके खिलाने पर तीव्र विरेचन होकर जलोदर, सूजन व अफारा मिट जाता है। जलोदर-थूहर के रस को लम्बे समय तक ज्वर आने के कारण पैदा हुए जलोदर रोग में 5-10 मिली की मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। गुदा रोग संबंधित अर्श में थूहर के दुग्ध और हल्दी के चूर्ण को समभाग मिलाकर लेप तैयार कर इस लेप को लगाने से बवासीर नष्ट होता है। त्वचा संबंधित व्रण में थूहर, अर्क, करंज तथा चमेली के पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर लेप लगाने से सड़े हुए घाव, बवासीर तथा नासूर नष्ट होते हैं । त्वचा के ऊपर मस्से और दूसरे कठोर फोड़े-फुन्सी इसके दुग्ध को लगाने से मिट जाते हैं। सर्वशरीर रोगों के पेशियों की सूजन पर थूहर का दुग्ध लगाने से सूजन बिखर जाती है और पकती भी नहीं है। सेहुंड का स्वरस निकाल कर उसमें बराबर का सरसों का तेल मिलाकर, पकाकर लगाने पर सोराइसिस तक ठीक होती है।

4.**पादप नामः** *Euphorbia thymifolia* L. (यूफॉर्बिया थाइमीफोलिया)

कुलः Euphorbiaceae (यूफॉर्बिएसी)
संस्कृत नामः क्षीरिका बहुपत्रा (Kshīrikā bahupatrā)
सामान्य नामः दूधी (छोटी)

वानस्पतिक विवरणः यह बहुशाखायुक्त, दृढ़-रोमिल, 12.5-25 सेमी लम्बा, वर्षायु, भूशायी शाकीय पौधा। इसके काण्ड भूशायी, बेलनाकार, पतले तथा रोमश, शाखाएँ अनावरित। इसके पत्र सरल, विपरीत, अनेक, 3-6 मिमी लम्बे एवं 2.5-4 मिमी चौड़े, ऊर्ध्व-पृष्ठ पर अरोमश तथा अधःपृष्ठ चमकीले एवं साधारणतया अल्प रोमश। इसके पुष्प अत्यन्त छोटे व टहनियों पर। इसके फल 1.5 मिमी लम्बे व रोमश तथा इसके बीज 1.2 मिमी लम्बे, चतुष्कोणीय। इसका पुष्पकाल एवं फलकाल जून से अगस्त तक होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः दूधी कफपित्तशामक, वातवर्धक, वातानुलोमक, उत्तेजक, रक्त-शोधक, कफघ्न, श्वास हर, मूत्रल, अश्मरीघ्न, आर्तवजनन, कुष्ठघ्न तथा विषघ्न होता है। यह स्तम्भक, प्रशामक, विरेचक, मूत्रल, आर्तवजनक, कामोत्तेजक, मिरोधी, कृमिनिस्सारक, क्षतिविरोहक, कफनिस्सारक, विषघ्न, उत्तेजक, शोधक, जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी, उद्वेष्टरोधी, कवकरोधी, श्वासकष्टरोधी तथा अल्परक्तशर्कराकारक है। यह कफवातज विकार, चर्मरोग, उदररोग, कृमि, श्वास, कास, विबन्ध, कुष्ठ, उपदंश, रक्तविकार तथा मूत्रकृच्छ्र शामक है। शिरो रोग के गंजापन में छोटी दूधी के पञ्चाङ्ग के स्वरस तथा कनेर के पत्तों के रस को मिलाकर सिर की गंज पर घिसने से बाल सफेद होना बंद होकर गंजापन दूर किया जाता है। नासा रोग के नकसीर में छाया शुष्क दूधी में बराबर की सेंगरी मिश्री मिलाकर खूब महीन चूर्ण कर प्रातः सायं एक चम्मच चूर्ण को गाय के दुग्ध के साथ पीना नकसीर में लाभकारी है। चर्मकील-मुहासों और दाद पर इसका दुग्ध लगाने से आराम मिलता है। हकलापन में दो ग्राम दूधी की जड़ को पान में रखकर चूसने से हकलापन दूर होता है। दुग्धिका के आक्षीर को मुंह में लगाने से मुखदूषिका का शमन किया जाता है। वक्ष रोगों के दमा में दूधी पञ्चाङ्ग के क्वाथ या स्वरस में 1 चम्मच शहद मिलाकर पीने से दमे में लाभ होता है। बच्चों के अतिसार में इसके पत्तों के 2 ग्राम चूर्ण या बीजों की फाँकी देने से अतिसार में लाभ होता है, और बच्चों के पेट के कीड़े मर जाते हैं। अतिसार-10 ग्राम दूधी को सुबह-शाम जल के साथ पीसकर पीना अतिसार में लाभकारी होता है। कुछ दिनों तक सेवन करने से आंतों को बल मिलता है। अतिसार में दुग्धिका पञ्चाङ्ग का कल्क बनाकर, उसमें शर्करा मिलाकर प्रयोग करना अतिसार में लाभकारी है। जलोदर में दूधी के पञ्चाङग का अर्क, रोगी को पानी की जगह पिलाया जाना बहुत लाभकारी है। प्रवाहिका में 5-10 मिली दूधी पञ्चाङ्ग स्वरस में 1 चम्मच मधु मिलाकर सेवन करना प्रवाहिका में लाभकारी होता है। उदावत में 1-4 ग्राम दुग्धिका के कल्क में 1 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातःकाल सेवन करना तीन दिनों में मलमूत्र, विबन्ध, उदावर्त, पिटिका, ग्रन्थि, पित्त तथा रक्तजन्य-विकार में लाभकारी होता है। वृक्कवस्ति संबंधित मधुमेह में गुड़मार बूटी, छोटी दूधी, पारसीक यवानी तथा जामुन की गुठली को लेकर समभाग जल में पीसकर छोटी-छोटी गोलियां बना कर इसमें से दो- दो गोली सुबह शाम ताजे जल के साथ सेवन करना हितकर है। मीठी, तली, भुनी, अम्ल वाली वस्तुओं का परहेज रखें। प्रजननसंस्थान संबंधित रोगों के दुग्धवर्धनार्थ में जब किसी माता को दुग्ध आना बंद हो जाय तो दूधी के आक्षीर को 500 मिली की मात्रा में 10-20 दिन प्रातः सायं पिलाना लाभकारी होता है। श्वेत और रक्त-प्रदर में दूधी की 2 ग्राम जड़ को घोंट-छानकर दिन में तीन बार पिलाना लाभकारी होता है, रक्त-प्रदर में हरी दूधी को छाया में सुखाकर कूट-छानकर प्रतिदिन एक चम्मच दिन में दो बार खाने से लाभ होता है। शुक्रमेह में दूधी को कूट-छानकर इसके 2-5 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच शक्कर के साथ खाने से कामशक्ति बढ़ती है, छोटी दूधी प्रतिदिन उखाड़कर साफ करके 15 ग्राम की मात्रा में लेकर 6 बादाम गिरी डालकर अच्छी तरह जल के साथ घोटकर एक गिलास में मिश्री मिलाकर दोपहर के समय सेवन से शुक्रमेह में लाभ मिलता है। आर्तव विकार में 1-2 ग्राम दुग्धिका के मूलचूर्ण का सेवन करने से आर्तव-विकारों का शमन होता है। त्वचा रोग संबंधित खुजली में ताजी दूधी या सूखी हुई दूधी 20 ग्राम लेकर बारीक पीसकर इसमें 10 ग्राम गाय का मक्खन घोल कर इसका लेप खुजली के स्थान पर लगाने और चार घण्टे बाद साबुन से धोने से यह ठीक होती जाती है। कुछ दिन के सेवन से ही सब प्रकार की खजुली दूर हो जाती है। दद्रु में दुग्धिका पञ्चाङ्ग स्वरस को लगाने से दद्रु का शमन होता है। विसर्प में दुग्धिका पञ्चाङ्ग को तैल में पकाकर, छानकर लगाने से लाभ मिलता है। व्रण में दुग्धिका के पत्रों को पीसकर लगाने से त्वचा विकारों तथा व्रण का शमन होता है। कांटा चुभ जाने पर दूधी को पीसकर लेप लगाने से कांटा निकल जाता है। उदर विकारों में पत्रों का फाण्ट बनाकर 10-30 मिली मात्रा में पीने से आमातिसार तथा अतिसार का शमन किया जाता है। वृक्कवस्ति रोग अश्मरी में पत्रों का काढ़ा बनाकर पीने से अश्मरी का शमन किया जाता है। प्रजनन संस्थान रोग संबंधित प्रदर में शुष्क पत्रों से निर्मित फाण्ट का सेवन करना रक्तप्रदर तथा श्वेतप्रदर में लाभकारी होता है। त्वचा रोग के चर्मकील में दुग्धिका के आक्षीर को लगाने से चर्मकील का शमन होता है। रोमान्तिका में दुग्धिका को पीसकर लगाना लाभकारी होता है। बाल रोग में 5 मिली पत्र-स्वरस दुग्ध के साथ प्रयोग करने से बच्चों के उदरशूल में लाभ मिलता है। इसका अधिक प्रयोग हृदय के लिए हानिकारक होता है।

5.पादप नामः *Jatropha curcas* L.

कुलः Euphorbiaceae (यूफॉर्बिएसी)
संस्कृत नामः तैलेरुकः अरोमवृन्तः (Tailerukaḥ aromavṛntaḥ)
सामान्य नामः व्याघ्रएरण्ड

वानस्पतिक विवरणः यह दक्षिण अमेरिका का आदिवासी पौधा, प्रायः भारत के समस्त प्रान्तों में पाया जाता है। वृक्ष छोटा, मुलायम काष्ठ से युक्त, लगभग 3-6 मी तक ऊंचा होता है। छाल धूसर वर्ण की, पिच्छिल आक्षीर। पत्र चिकने, बड़े, एकांतर, 6-15 सेमी लम्बे, अण्डाकार, 3-5 खण्डों में विभक्त। पत्तों को तोड़ने से सफेद रंग का दुग्ध निकलता है। पुष्प लगभग 0.7 सेमी व्यास के, पीताभ-हरित वर्ण के, गुच्छों में। फल 2.5 सेमी लम्बे, हरे रंग के, अण्डाकार, पक्वावस्था में कृष्ण वर्ण के होते हैं तथा सूखने के पश्चात् बहुत दिनों तक पेड़ पर लगे रहते हैं। बीज 1.8 सेमी तक लम्बे, हल्के भूरे-कृष्ण वर्ण के, अण्डाकार। पुष्पकाल जुलाई से सितम्बर तक तथा फलकाल अक्टूबर से दिसम्बर तक होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः व्याघ्रएरण्ड के पत्र स्तन्यवर्धक, पूयःनिःसारक, कृमिघ्न तथा रक्तिमाकारक हैं। आक्षीर विरेचक तथा रक्तस्तम्भक है। बीज विरेचक, मधुर, उष्ण, स्वेदक, पाचक, बलकारक तथा कृमिघ्न। मूल वामक तथा विरेचक। नेत्र रोग में एरण्ड बीजों को पीसकर नेत्र के बाहर चारों ओर लगाने से नेत्र वेदना ठीक होती है। मुख रोग संबंधित दंतमूल शोथ में व्याघ्रएरण्ड की टहनियों का दातून के रूप में प्रयोग करने से मसूड़ों की सूजन मिट जाती है। दंतशूल में व्याघ्रएरण्ड के मूल एवं त्वक् का काढ़ा बनाकर गरारा करने से दंतशूल (दांत दर्द) तथा कण्ठदाह (गले की जलन) में लाभ होता है। उदर रोग संबंधित अतिसार में व्याघ्रएरण्ड काण्ड-त्वक् को हींग एवं मक्खन के साथ घिसकर, अन्तः प्रयोग करने से अजीर्ण तथा अतिसार का शमन होता है। गुदा रोग के रक्तार्श में व्याघ्रएरण्ड पत्र-स्वरस को अर्श के मस्सों में लगाने से रक्तार्श में लाभ होता है। अस्थिसंधि रोग संबंधित आमवात में व्याघ्रएरण्ड काण्ड-त्वक् का क्वाथ बनाकर परिषेचन करने से आमवात में लाभकारी है। व्याघ्रएरण्ड बीज तैल की मालिश करने से आमवात में लाभ होता है। त्वचा संबंधित रोग पामा में व्याघ्रएरण्ड के पत्रों को कूट-पीसकर, उसका स्वरस निकालकर लगाने से व्रण तथा पामा में शीघ्र लाभकारी है। व्याघ्रएरण्ड के पौधों से प्राप्त आक्षीर (सफेद दूध) या बीज तैल को खुजली, पामा, दाद तथा घाव में लगाना लाभकारी होता है। सर्वशरीर रोग के दाह में व्याघ्रएरण्ड मूल-छाल को पीसकर स्थानीय प्रयोग से दाह तथा

शोथ का शमन होता है। ज्वर में व्याघ्रएरण्ड पत्र स्वरस में नींबू स्वरस तथा जल मिलाकर इस जल से स्नान करना लाभकारी होता है।

6.**पादप नामः** *Mallotus philippensis* (Lam.) Müll.Arg.

कुलः यूफॉर्बिएसी (Family: Euphorbiaceae)
संस्कृत नामः कम्पिल्लकः सिन्दूरः (Kampillaka sindūra)
सामान्य नामः काम्पिल्ल (कबीला)

वानस्पतिक विवरणः वृक्ष 6-9 मी तक ऊंचा, छोटा बहुशाखित, सदाहरित, एकलिंगाश्रयी, बहुवर्षायु। काण्ड छोटा, बहुधा पुश्ता, तनु शाखाओं से युक्त। नवीन प्ररोह, पर्णवृन्त, पत्र एवं पुष्पक्रम लोहित पीताभ से लौह वर्ण सदृश रोमश। काण्ड-त्वक् पतले धूसर अथवा पाण्डुर भूरे वर्ण के, खुरदुरे, अनियमित दरार-युक्त, 5-7 मिमी मोटा। प्रतान कपीतवर्णी अथवा मण्डूरी-घन रोमश। पत्र सरल, एकांतर अथवा लगभग विपरीत, 7.5-15 सेमी लम्बे एवं 3.2-7.5 सेमी चौड़े, अण्डाकार अथवा अण्डाकार-दीर्घवृत्ताकार या अण्डाकार-भालाकार, शीर्ष तीक्ष्णाग्र से लम्बाग्र, आधार गोलाकार या तीक्ष्णाग्र अथवा कुंठाग्र, उपान्त पूर्ण अथवा अल्प दंतुर, ऊर्ध्व-पृष्ठ अरोमश, अधोपृष्ठ चमकीला रोमश और अनेक रक्त वर्ण की ग्रन्थियों से युक्त, शिराएँ जालिकास्वरूपी, आधार पर स्पष्ट 3-तंत्रिकाओं से युक्त, आधार के ऊर्ध्व में 4-7 युग्मित तंत्रिकाओं से युक्त। पर्णवृंत 2.5-5 सेमी लम्बा, शीर्ष के प्रत्येक ओर 2 छोटी ग्रन्थियों से युक्त। अनुपत्र छोटे, 1 मिमी। पुष्प छोटे, एकलिंगाश्रयी, हरिताभ-पीतवर्ण के, दलहीन, वृंतहीन अथवा लगभग वृंतहीन, सरल अथवा शाखित अंतस्थ गुच्छाकार कठोर कणिश पुष्पक्रम में स्थित। पुंपुष्प सीधे, दीर्घ, अंतस्थ कणिश पुष्पक्रम में संयुक्त। सहपत्र 1.5 सेमी लम्बे, चौड़े अण्डाकार। बाह्यदलपुंज 4 या कभी-कभी 5 बाह्यदल-युक्त, 3 मिमी लम्बे, पालियाँ अण्डाकार-भालाकार से भालाकार, तीक्ष्णाग्र, रोमश, ग्रंथिल। पुंकेसर 20-30 अथवा अधिक, मध्य में चपटे या उत्तल पात्रधानी पर गुच्छों में। पुंतंतु मुक्त एवं परागकोश छोटे, पृष्ठालग्न, कोशिकाएँ गोलाकार अथवा अल्प दीर्घायत होती हैं। बिम्ब सूक्ष्म, केन्द्र में स्थित। बन्ध्य स्त्रीकेसर अनुपस्थित अथवा अत्यधिक सूक्ष्म। स्त्रीपुष्प छोटे कणिश पुष्पक्रम में एकल। बाह्यदलपुंज आधार पर लगभग विभाजित। बाह्यदल 3-4, पुंपुष्प की तुलना में अधिक स्थूल, 3-5 पालियुक्त, 1.5 मिमी लम्बे, अण्डाशय पर लग्न, लगभग चिरस्थायी, त्रिकोणीय-अण्डाकार। अण्डाशय 2-4 कोशिका-युक्त, रोमश एवं सघन लाल वर्ण का ग्रन्थिल। वर्तिका 3, 3-4 मिमी लम्बी, मुक्त अथवा अधो-भाग में सहजात, फैले हुए अथवा प्रत्यावर्तित, पूर्ण रोमगुच्छ युक्त या अंकुरक युक्त। फल गोलाकार, 8-13 मिमी व्यास के, 3 पालियुक्त, कोष्ठ-विदारक 3 कपाट युक्त सम्पुटक, जो सघन रक्ताभ-भूरे वर्ण के ग्रन्थिल रोमश आवरण-युक्त। बीज कृष्ण वर्ण के, चिकने, लगभग गोलाकार, 0.4-0.5 सेमी व्यास के होते हैं। पुष्पकाल अगस्त-दिसम्बर एवं फलकाल नवम्बर-मई के मध्य होता है (Figure 1)।

औषधीय गुण एवं प्रयोगः दीपन, विरेचक, भेदक, व्रणरोपक, कृमिरोग, गुल्म, उदररोग, व्रण, प्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, विबन्ध, आमदोष, उदररोग, आध्मान, रक्तदोष तथा रक्तगुल्म में लाभकारी होता है।

***Baliospermum solanifolium* (Burm.) Suresh**

***Euphorbia hirta* L.**

***Euphorbia neriifolia* L.**

***Euphorbia thymifolia* L.**

***Jatropha curcas* L.**

***Mallotus philippensis* (Lam.) Müll. Arg.)**

Figure 1: Plants of Euphorbiaceae Family found in Morni Hills, Haryana

परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोधपत्र में मोरनी पहाड़ी के विभिन्न सर्वेक्षणों के दौरान एकत्र किए गए यूफॉर्बिएसी कुल के पौधों के वानस्पतिक विवरण के साथ आयुर्वेदिक व चिकित्सकीय उपयोगों का वर्णन किया गया है इस कुल के पौधों में कांटे व सफेद रंग का दुग्ध निकलता है जिसका उपयोग विभिन्न उपचारों में किया जाता है। इस कुल के पौधों को अष्ठीलिका, अफारा, अर्श, आर्तवविकार, आमवात, आंतविकार, उत्तेजक, उदररोग, उन्माद, कफ, कुष्ठ, कृमिघ्न, गुल्म, गंजापन, चर्मकील शमन, चर्मरोग, तमकश्वास, दीपन, दांत निकलने के लिये दांत के कृमि, प्रमेह, प्रवाहिका, रक्तप्रदर, रोमान्तिका, विरेचन, व्रण रोपक के रूप में, श्वास, श्वेतप्रदर व अन्य बीमारियों की रोकथाम के लिए प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

यूफॉर्बिएसी कुल के पौधे का उपयोग अनेक रोगों के उपचार में किया जाता है, जो इसकी महत्ता को दर्शाता है। इसका औषधीय प्रयोग सावधानीपूर्वक तथा चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार करना चाहिए। इस कुल के पौधे शुष्क वातावरणीय परिवेश में भी अनुकुलता प्राप्त कर लेते हैं, अतः इसे आसानी से उगाया जा सकता है। इसके पुष्प व नवोद्भिद कोपलें आकर्षक होने के कारण सजावटी पौधों के रूप में भी प्रयोग की जाती है।

अभिस्वीकृति

लेखकगण परम् पूज्य स्वामी रामदेव जी का आभार प्रकट करते हैं जिनकी प्रेरणा से यह कार्य संपन्न किया गया एवं शोधपत्र लेखन में श्रीकान्त चौहान के हिन्दी टंकण के लिए धन्यवाद।

लेखकों का योगदान

संकल्पना और संसाधन निर्माण-आचार्य बालकृष्ण
औपचारिक विश्लेषण-भाष्कर जोशी
औषधीय गुण-राजेश मिश्रा, रमाशंकर
मूल लेख-उदय भान प्रजापति
समीक्षा और सम्पादन-अनुपम श्रीवास्तव

Table 1: List of Euphorbiaceae plants reported in Morni Hills

S. No.	Name of Plant	Habit	Common / Vernacular Name
1	*Acalypha ciliata* Forssk.	Herb	Kuppi, Kokali
2	*Acalypha wilkesiana* Müll.Arg.	Shrub	-
3	*Baliospermum solanifolium* (Burm.) Suresh	Shrub	Hastidanti, Wild Castor.
4	*Croton bonplandianus* Baill.	Shrub	Ban Tulsi
5	*Euphorbia clarkeana* Hook. f.	Herb	-
6	*Euphorbia fusiformis* Buch.-Ham. ex D. Don	Herb	Banamuli
7	*Euphorbia granulata* Forssk.	Herb	-
8	*Euphorbia helioscopia* L.	Herb	-
9	*Euphorbia heterophylla* L.	Herb	-
10	*Euphorbia hirta* L.	Herb	Dudhi
11	*Euphorbia neriifolia* L.	Shrub	Thor
12	*Euphorbia parviflora* L.	Herb	-
13	*Euphorbia prostrata* Aiton	Herb	-
14	*Euphorbia pulcherrima* Willd. ex Klotzsch	Shrub	Poinsettia
15	*Euphorbia royleana* Boiss.	Shrub	Thor
16	*Euphorbia thymifolia* L.	Herb	Laghu Dugdhika
17	*Falconeria insignis* Royle	Tree	Khir
18	*Jatropha curcas* L.	Shrub	Ratanjot
19	*Jatropha gossypiifolia* L.	Shrub	Kattamanakkhu
20	*Jatropha integerrima* Jacq.	Shrub	-
21	*Mallotus philippensis* (Lam.) Müll.Arg.	Tree	Rohini, Kamla
22	*Mallotus repandus* (Willd.) Müll.Arg.	Tree	Pindalu
23	*Ricinus communis* L.	Tree	Caster Plant, Arandi
24	*Triadica sebifera* (L.) Small	Tree	Chinese Tallow Tree

संदर्भ

1. Balkrishan A. (2018). Morni Hills ke Mahatwapurn Ausadhiya paudhe. Haridwar: Divya Prakashan, Uttarakhand.
2. Balkrishan A. (2017). Ved Varnit Vanspatiya. Haridwar: Divya Prakashan, Uttarakhand.
3. Balkrishna, A., Prajapati, U. B., Srivastava, A., & Mishra, R. (2018) Phytoetymology and ethnobotany of indigenous or introduced gymnosperms in India, Int. J of Unani Medicine; Vol. 2(4): 44-51.
4. Balkrishna A, Srivastava A, Joshi B, Prajapati U. B. (2018) Etymology of Endemic Plants of Uttarakhand, India. International Journal of Forest Usufructs Management (IJFUM). Vol.19:66-69.
5. Balkrishna A, Tanwar S, Prajapati UB (2021). Medicinal and Nutritional Aspect of Genus Prunus L. with Phytoetymology. International Journal of Unani and Integrative Medicine 2021; 5(2): 24-27
6. Chopra R. N., Nayar S. L. Chopra I. C. 1956. Glossary of Indian Medicinal Plants. CSIR, New Delhi.
7. Kirtikar K.R., Basu B. D. 1918, 1935; Indian Medicinal Plants. L.M. Basu Road, Allahabad.
8. Kumar M, Singh M. 2013. Study of plant diversity of Karnal District, Haryana, India Internat. J. Pharmacy & Life Sciences 4(4): 2573-2582.
9. Rani, P. Sood N. 2021. Traditional practice of medicinal plants of Euphorbiaceae growing in rural pockets of Sub-District Uklana, Mandi (Hissar), Haryana, India. Journal of Agriculture 4(1):1-3.
10. Stern, W. T. (1983) Botanical Latin (Third Edition). London: David & Charles.